Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय
पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी) लेखक भरत भूषण अग्रवाल
एकांकी का शेष भाग (पृष्ठ संख्या 75, 76, 77)

युधिष्ठिर ने दुर्योधन के अंतिम समय में वहाँ आने का कारण जताते हुए कहा था कि मैं तुम्हें शांति देने आया हूँ। मैंने सोचा हो सकता है तुम्हें पश्चाताप हो रहा हो। यदि ऐसा हो तो मैं तुम्हारी व्यथा हल्की कर सकूँ। मैं इसी उद्देश्य से आया हूँ। तब दुर्योधन ने कहा कि तुम मेरी मृत्यु पर मनाने आए हो। युधिष्ठिर न्यायप्रिय और धर्म पर चलने वाले थे। वे अन्याय नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने कहा अर्थ का अनर्थ न करो। युधिष्ठिर लगा कि शायद दुर्योधन को पश्चाताप हो रहा हो कि उसके कुचक्र, द्वेष और अन्याय पर चलने के कारण उसने अपने बंधु-बांधवों और स्वजनों का नाश करवाया है। कितने ही निर्दोष व्यक्तियों की जाने उसके हठधर्मी स्वभाव के कारण गई। उसने गुरुजनों और बुजुर्गों की बात ठुकरा दी और हमेशा अधर्म पर चलने की चेष्टा की। इसी कारण यह सब हुआ। इसी पश्चाताप की ओर युधिष्ठिर का संकेत है।

युधिष्ठिर के कथन को सुनकर दुर्योधन युधिष्ठिर को मिथ्याभागिनी और ढोंगी कहा क्योंकि जब युधिष्ठिर युद्ध की साँझ को दुर्योधन से मिलने रणभूमि में जाते हैं तो दुर्योधन को लगता है कि वह उसे तड़पते हुए मरने के लिए देखने आए हैं लेकिन जब युधिष्ठिर कहते हैं कि वह उसे सांत्वना देने आए हैं तो वह उन्हें मिथ्याभागिनी और ढोंगी कहता है। दुर्योधन युधिष्ठिर पर आरोप लगाता है कि उसने धर्म और न्याय की बात करके राज्याधिकार की माँग की और सभी आत्मजनों को अपनी ओर मिलाकर युद्ध की नींव रखी और षड़यन्त्र रचकर महाभारत का युद्ध करवाया।

दुर्योधन का पक्ष प्रबल था। बड़े-बड़े महारथी उसके साथ थे। सैन्य बल उसका पाण्डवों से अधिक था। बड़े- बड़े महारथी उसके साथ थे। सैन्य बल उसका पाण्डवों से अधिक था। प्रतापी भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, अश्वथामा, कर्ण, जयद्रथ आदि उसके साथ थे परन्तु दुर्योधन अन्याय पर चल रहा था इसलिए सबकी सहानुभूति पाण्डवों की तरफ़ थी। नीति विशारद श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी थे। उन्होंने बड़े विवेक से अर्जुन की रक्षा की और पाण्डवों का मार्ग दर्शन सही प्रकार से किया। उधर दुर्योधन की तरफ़ नीति विशारद ऐसा कोई नहीं था जो स्पष्ट बात कह सकता। दुर्योधन शकुनि जैसे दुष्ट प्रकृति के व्यक्ति के हाथों की कठपुतली बन गया था। हमेशा वह षड़यन्त्र और झूठी प्रशंसा से ही प्रसन्न होता रहा। भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य जैसे धुरंधर व्यक्तियों का वह उपहास करता था। इन्हीं कारणों से प्रबल पक्ष के होते हुए भी दुर्योधन को महाभारत के युद्ध में पराजय का मुँह देखना पड़ा।

युधिष्ठिर के दुर्योधन नाम से पुकारने पर दुर्योधन ने युधिष्ठिर को सुयोधन नाम से पुकारने के लिए कहा। दुर्योधन को लगा कि युधिष्ठिर उसे सुयोधन की जगह दुर्योधन कहकर उसके नाम की खिल्ली उड़ा रहा है। क्या द्वेष से उसने मानव धर्म भी खो दिया है। तब युधिष्ठिर दुर्योधन से माफ़ी माँगता है और कहते हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ तुम्हें दुर्योधन के नाम से पुकारेंगी। तुम्हारे कार्य का साक्षी इतिहास पुकार-पुकार कर यह कहेगा।

युधिष्ठिर को अपने सगे-संबंधियों के प्राण त्यागने का भीषण दृश्य और अबलाओं- अनाथों की करुण चीत्कार का हृदय दहलाने वाले दृश्य देखने पड़े। युधिष्ठिर ने न्याय के लिए बारह वर्ष का वनवास और एक साल का अज्ञातवास भोगा। वन के असहनीय दुःख भोगकर भी वे न्याय पर से नहीं डिगे। यदि वे भी दुर्योधन की तरह अन्याय पर चलते तो वन जाने का प्रश्न ही नहीं उठता और अपने राज्य का सुख भोगते।

दुर्योधन को लगा कि युधिष्ठिर झूठे अहंकार में अपनी प्रशंसा कर रहा है। दुर्योधन के अनुसार जिस राज्य पर

युधिष्ठिर अपना अधिकार चाहता था, वह उसके पिता का कभी था ही नहीं। दुर्योधन युधिष्ठिर को बताता है कि तुम क्यों भूल रहे हो कि वह राज्य तुम्हारे पिता पाण्डु के पास आया कैसे? जन्म के अधिकार से तो बिलकुल भी नहीं क्योंकि तुम्हारे पिता ज्येष्ठ पुत्र नहीं थे, ज्येष्ठ पुत्र मेरे पिता थे। तुम्हारे पिता को राज्य की देखभाल का कार्य केवल इसलिए मिला था क्योंकि मेरे पिता को नेत्रहीनता के कारण राज्य-संचालन में असुविधा होती अन्यथा उस राज्य पर न तुम्हारे पिता का और न तुम्हारा अधिकार था।

युधिष्ठिर ने दुर्योधन की बात का उत्तर देते हुए कहा कि तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु राज्य का नियम तो यही कहता है कि चाहे किसी भी कारण से हो जब राज्य मेरे पिताजी को मिल गया तब उनके बाद उस राज्य पर मेरा ही अधिकार हुआ अर्थात् राजा के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य का अधिकार होता है। दुर्योधन ने कहा कि पितामह भीष्म, महात्मा विदुर, गुरु कृपाचार्य और महाराजा धृतराष्ट्र किसी ने भी तथ्य तक पहुँचने की चेष्टा नहीं की और सभी ने मेरा हठ ही देखा अर्थात् मेरे हठी स्वभाव के पीछे छिपे संपूर्ण सत्य को जानने का प्रयास ही नहीं किया। सबने यही समझा कि दुर्योधन हठधर्मी है। वह अपने नेत्रहीन पिता को ही राज्य का अधिकारी मानता था, जिन्होंने अपनी नेत्रहीनता के कारण पाण्डु को राज्य का अधिकार दे दिया था। लेकिन युधिष्ठिर उनके बाद स्वयं को राज्य का अधिकारी समझने लगा था, जो दुर्योधन को अस्वीकार था। दुर्योधन का कहना था कि पाण्डु के बाद राज्य का अधिकार दुबारा उसके पिता के पास ही आना था और वे तब निर्णय करते हैं कि राज्य किसे सौंपा जाए? इस बात को सबने मेरा हठ कहा, इस बात के पीछे छिपे न्याय के पक्ष को किसी ने नहीं देखा। सब तुम्हारे गुणों से प्रभावित थे। सब अर्थात् भीष्म पितामह, महात्मा विदुर, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य तुम्हारी वीरता से डरते थे, इसलिए किसी ने तुम्हारा विरोध नहीं किया।

ये सब यह नहीं समझ पाए कि भय जिसका आधार हो, वहाँ शांति स्थायी नहीं हो सकती। जहाँ भय से शांति स्थापित होती है, वह स्थायी नहीं होती जैसे ही भय समाप्त हुआ, शांति भी वहाँ से चली जाती है। दुर्योधन की बात सुनकर युधिष्ठिर ने कहा कि बेकार में गुरुजनों पर कायरों का आरोप लगा रहे हो। यदि मेरे पक्ष में न्याय न होता तो कोई भी मुझे राज्य देने की माँग क्यों नहीं करता?

आज हम अपनी एकांकी को यहीं विराम देते हैं। आप सब इस एकांकी को पृष्ठ संख्या ~~77~~ तक पढ़ोगे व ध्यान से समझोगे।

गृहकार्य

"अरे पामर! तेरा धर्म तब कहाँ चला गया था, जब एक निहत्थे बालक ------- धिक्कार है तेरे ज्ञान को, तेरी वीरता को।"

प्रश्न (क) 'पामर' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? क्या आप इस संबोधन को उचित मानते हैं?

(ख) निहत्था बालक कौन था? उसे सात महारथियों द्वारा कब और किस प्रकार मारा गया था?

(ग) वक्ता के अनुसार श्रोता को कौन-सी बात अनुचित लगी थी तथा कब?

(घ) वक्ता के अनुसार श्रोता ने धर्म की दुहाई किस प्रकार दी?